राज्यों से पलायन क्यों?

देश के कई ग़रीब राज्यों से भारी संख्या में लोग़ों का पलायन बड़े एवं औद्योगिक शहरों में लगातार जारी है। जिन राज्यों से भारी संख्या में लोग़ों का पलायन हो रहा है, उनमें प्रमुख हैं - बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा आदि। सवाल है, लोग़ अपने राज्यों से पलायन क्यों करते हैं? इसका सीधा जवाब यह है कि अपने राज्यों में उन्हें माकूल रोज़गार नहीं मिलता। अगर छोटा-मोटा साधारण रोज़गार भी लोग़ों को अपने राज्य में मिल जाये तासे वे कभी पलायन नहीं करेंगे। पर उपरोक्त राज्यों की इतनी दुर्दशा हो चुकी है और सरकारी लूटतंत्र वहां इतना मजबूत है कि आम ग़रीब लोग़ों के लिए दो जून का भोजन जुटा पाना भी कठिन है। जो लोग़ खेती पर आश्रित हैं, उनकी दशा बहुत खराब है। वे उपभोग के लिए खेती करते हैं, पर साल भर खाने लायक अन्न उपजा नहीं पाते।

वे छोटी-छोटी जोतों के मालिक हैं और जोतें भी उनकी बिखरी हुई हैं। अगर जोतदार नीची जाति का हुआ तो खेतों में स्वयं श्रम कर लेता है, पर ऊंची जाति के लोग़ ऐसा नहीं करते। उन्हें खेतिहर मज़दूरों की जरूरत होती है, पर मज़दूर उन्हें मिल नहीं पाते क्योंकि उनमें मज़दूरों को नकद भुगतान करने की क्षमता नहीं होती। इस तरह, उनकी खेती संकट की शिकार होती है। दूसरे, बीज और खाद के लिए भी इनके पास पैसा नहीं होता। इसके लिए ये कर्ज़ लेने को मजबूर होते हैं। इसके अलावा कभी बाढ़ तो कभी सुखाड़ के कारण भी फ़सल मारी जाती है। अपने गांवों में खेतिहर मज़दूरों को जब नकद मज़दूरी नहीं मिलती है तो वे हरियाणा और पंजाब जैसे समृद्ध राज्यों में पलायन कर जाते हैं जहां उन्हें अपेक्षाकृत अच्छी मज़दूरी मिल जाती है। आज बिहार जैसे राज्यों की समस्या यह है कि वहां के किसानों को खेतिहर मज़दूर ढूंढे नहीं मिलते। यह तो वही खेतिहर मज़दूरों के पलायन की। लेकिन सिर्फ़ खेतिहर मज़दूर ही नहीं, बड़े पैमाने पर नवजवान भी पलायन कर रहें हैं। इनमें नीची जाति के नवजवान हैं तो ऊंची जातियों के भी। इनकी दशा ऐसी हो गई है कि अपने गांव-घर से पलायन कर औद्योगिक शहरों में नहीं जायें तो भूखों मरें। कोई भी स्वेच्छा से पलायन नहीं करता, बल्कि जीवन की कटु परिस्थितियां उसे ऐसा करने पर मजबूर कर देती हैं। बड़े औद्योगिक शहरों में भी उन्हें काम मिल ही जाये, इसकी कोई गारंटी नहीं होती। पलायन कर आने वाले नवयुवक सामान्य-सी शिक्षा पाये हुए होते हैं, वे कोई तकनीकी शिक्षा हासिल नहीं किये होते। वैसे उन नवजवानों की भी कमी नहीं है जो तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद बेरोज़गार हैं। इन्हें औद्योगिक शहरों के कल-कारखानों में स्किल्ड लेबर के रूप में काम मिल जाता है और धीरे-धीरे ये मशीन ऑपरेटर भी बन जाते हैं।

पर सामान्य शिक्षा प्राप्त नवयुवकों को औद्योगिक इकाइयों अथवा छोटे-बड़े वर्कशॉपों में हेल्पर की नौकरी मिलती है। वह भी लगातार नहीं। अगर उनकी नौकरी लगातार चलती रही तो वे परमानेंट होने का दावा ठोक सकते हैं, इसलिए प्रबंधन हर दूसरे-तीसरे महीने इनकी नौकरी ब्रेक करता रहता है। नौकरी भी इन्हें ठेकेदारों द्वारा दिलाई जाती है और इसके लिए इन्हें ठेकेदारों को निश्चित रकम देनी पड़ती है। इनका सारा हिसाब-किताब ठेकेदारों के पास होता है। इनकी तनख्वाह बहुत ही कम दो हज़ार से ढाई हज़ार तक होती है। जैसे-जैसे ये पुराने होते जाते हैं और कुछ स्किल सीख लेते हैं तो इनके मेहनताने में भी कुछ वृद्धि होती है, पर उस दौरान बढ़ती महंगाई की तुलना में वह कुछ नहीं होती।

अधिकांश मज़दूर अपने परिवार को साथ नहीं रखते, क्योंकि उसका खर्चा संभाल पाना उनके लिए संभव नहीं हो सकता। ये दो-चार मज़दूर मिल कर किसी झुग्गी बस्ती में किराये पर एक कमरा लेते हैं और उसी में गुज़र-बसर करते हैं। किसी की नाइट ड्यूटी होती है तो किसी की डे ड्यूटी। चार मिल कर साथ रहने से इन्हें दो पैसे बच जाते हैं जो वे घर भेज देते हैं, पर वह रकम उनके घर वालों के लिए ऊंट के मुंह में जीरे के समान होती है। पर वे करें क्या? पैसा कमाने के लिए डकैती तो मार नहीं सकते।

झुग्गियों में जहां वे रहते हैं, उसे जीता-जागता नरक कहा जाये तो उसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं हो सकती। गंदगी, नाला, कीचड़ और हर तरफ फैला दुर्गन्ध। गांवों में खुले और साफ-सुथरे वातावरण में रहने वाले लोग़ों को यहां जो परेशानी होती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। पर मजबूरी के मारे लोग़ इसी दुर्गन्ध में जीने को अभिशप्त होते हैं। साल में एकाध बार केवल कुछ दिनों के लिए ये घर जाते हैं, पर अपने दुख का हाल किसी से सुना भी नहीं सकते।

माना जाता है कि सबसे ज़्यादा पलायन बिहार से ही होता है। इसकी वजह यह है कि बिहार में सबसे ज़्यादा गरीबी, भुखमरी और कंगाली है। बिहार के लोग़ देश के कोने-कोने में फैले मिलेंगे। फरीदाबाद, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, साहिबाबाद, रोहतक, जालंधर, लुधियाना, गुजरात में सूरत, सौराष्ट्र के शहरों और आबादी से दूर अंबानी के कारखानों तक में बिहारी मज़दूरों की पूरी फौज़ है। बिहार के लोग़ तो मज़दूरी करने के लिए असम और पूर्वोत्तर राज्यों तक में चले जाते हैं। यही नहीं, अपनी जान पर खेल कर ये जम्मू और कश्मीर तक चले जाते हैं। ये वहां सुरक्षा गार्ड से लेकर हर तरह की मज़दूरी करते हैं। बिहार और अन्य राज्यों में भर्ती करने वाले दलाल बैठे हैं - कुछ असली तो ज़्यादातर नकली। नौकरी दिलवाने का भरोसा दिला ये लोग़ों से बतौर रजिस्ट्रेशन फ़ीस वसूल करते हैं और बाद में गच्चा दे देते हैं। कुछ उन्हें बड़े औद्योगिक शहरों का पता-ठिकाना पकड़ा देते हैं जो सही भी हो सकता है अथवा ग़लत भी। बहुत से लोग़ तो अपने उन रिश्तेदारों की मदद से आ जाते हैं जो पहले से ही नौकरी कर रहे होते हैं। कुछ खुद ही किसी बड़े शहर का रुख कर लेते हैं और भटकते-भटकते कोई नौकरी पा भी जाते हैं। लेकिन स्थाई निवासी उनके साथ काफ़ी भेदभाव करते हैं। वे उनके खिलाफ़ लोग़ों की भावनाओं को भड़काते हैं। पिछले दिनों मुंबई में यही हुआ था जब राज ठाकरे के भड़काने और बिहार एवं उत्तर प्रदेश के लोग़ों के खिलाफ़ ज़हर उगलने के कारण उन पर स्थानीय गुंडों ने हमला शुरू कर दिया और उनके साथ लूटपाट करने लगे। तब भारी संख्या में बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग़ों ने मुंबई छोड़ने में ही अपनी भलाई समझी। इसके बाद उद्योग संचालकों को महसूस हुआ कि बिहार और उत्तर प्रदेश के ये मज़दूर एवं कारीगर उनके लिए कितने कारगर थे। राज ठाकरे का क्या, वह तो उद्योग चले तो भी, न चले तो भी, चौथवसूली करेगा ही। असम में भी बाहरी मज़दूरों को हिंसा का सामना करना पड़ता है। बावजूद मज़दूर जान पर खेल कर वहां रहते ही हैं। दिल्ली एवं इससे लगे औद्योगिक क्षेत्रों में तो बिहारी शब्द का गाली की तरह इस्तेमाल किया जाता है। यह भी कहा जाता है कि बिहारी तो जन्मजात अपराधी होते हैं। अपने आप को बिहारी बताने पर जल्दी किराये पर कमरा नहीं मिल सकता। इसलिए लोग़ अपने बिहारी होने की पहचान को छुपा लेना चाहते हैं। कितनी शर्मनाक स्थिति है कि कोई अपने मूल निवास स्थान को छुपाने की कोशिश करे। पर मजबूरी है। बिहारियों के बारे में यह प्रचलित किया गया है कि 'एक बिहारी, सौ बीमारी।' पंजाब में इन्हें भैया कहा जाता है। भैया बहुत ही सम्मानजनक संबोधन है। पर नहीं, यहां भैया का अर्थ बदला हुआ है। वह सम्मानबोधक नहीं। इसी तरह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, राजस्थान आदि राज्यों से बेरोज़गारों का पलायन होता है। इन्हें भी वही सारी कठिनाइयां सहनी पड़ती हैं जो बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग़ों को। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ से तो काम दिलाने के बहाने भारी संख्या में जवान और जवानी की दहलीज पर खड़ी नवयुवतियों को दिल्ली और मुंबई ले जा कर चकला घरों में बेच दिया जाता है। इस काम में कई गिरोह लगे हुए हैं। दिल्ली एवं मुंबई रेलवे स्टेशन पर ऐसी औरतें बैठी रहती हैं जो अकेले या दो-चार के झुंड में आदिवासी लड़कियों को आते देख उन्हें नौकरी दिलाने का प्रलोभन देकर गर्म गोश्त के धंधे में डाल देती हैं। ऐसी कई घटनायें सामने आ चुकी हैं। सवाल है, क्या लोग़ों का यह पलायन रोका जा सकता है? वर्तमान व्यवस्था में तो रोका नहीं जा सकता। वर्तमान पूंजीवादी-साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था का परिणाम है असमान विकास। इस व्यवस्था में देश के कुछ इलाके तो काफ़ी विकसित हो जाते हैं और ज़्यादातर इलाके पिछड़े रह जाते हैं। पिछड़े रह गये इलाके आगे बढ़े इलाकों के लिए आंतरिक उपनिवेश में बदल जाते हैं। इस तरह ऐतिहासिक स्तर पर उपनिवेशवाद के खात्मे के बावजूद एक राष्ट्र के अंतर्गत आंतरिक उपनिवेश बना रहता है। आगे बढ़े हुए इलाके इस आंतरिक उपनिवेश का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं। ये पिछड़े इलाकों से खनिज संपदा का दोहन करते हैं। और भी कीमती चीजें वहां पाई जाती हैं, उसे भी लूट लेते हैं। इसके अलावा मानव संसाधन तो हैं ही जो स्वयं इनकी ओर खिंचा चला आता है। इसलिए जब तक पूंजीवादी लूट पर आधारित इस शोषक व्यवस्था का खात्मा नहीं होगा, पिछड़े इलाकों से आगे बढ़े हुए क्षेत्रों में पलायन नहीं रुकेगा।

-मनोज कुमार झा

रामदेव की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षायें

योग गुरु स्वामी रामदेव की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षायें बड़ी तेज़ी से अपने पंख फैलाती जा रही हैं। अब ये राजनीति में आने की पुरज़ोर कोशिशों में लगे हुए हैं। कुछ समय पूर्व इन्होंने नेपाल की यात्रा की और वहां की सदन को संबोधित भी किया। देश में भी लगभग सभी राजनेताओं से रामदेव के संबंध हैं। नीतीश कुमार ने तो उन्हें बिहार का ब्रांड एंबेसडर ही बना डाला था। रामदेव द्वारा आयोजित किये जाने वाले प्रत्येक कार्यक्रम में नेताओं की अच्छी-खासी उपस्थिति रहती आई है। ऐसे इस देश में योगी तो कितने ही हुए, पर रामदेव जैसी लोकप्रियता किसी को नहीं मिल पाई। इसका कारण यह है कि बाबा आत्म प्रचार की कला में निपुण हैं। आत्म प्रचार के लिए इन्होंने टीवी का सहारा लिया और घर-घर में पहुंच गये। आज के समय में टीवी का प्रसार सुदूर गांवों में भी हो चुका है, शहरों और कस्बों की बातें तो छोड़िये। शायद ही कोई ऐसा परिवार मिले जिसके पास टीवी न हो। बाबा ने टीवी को अपना माध्यम बना लिया। बाबा ने आज के युग को अच्छी तरह समझ लिया है। यही कारण है कि उन्होंने योग की विविध मुद्राओं को दिखाने वाली सीडियां निकलवाईं जो बाज़ार में धड़ल्ले से बिकीं। इससे बाबा को अच्छी-खासी आमदनी हुई। इसके अलावा आयुर्वेदिक दवा निर्माण से भी बाबा को काफी कमाई हुई।

एक समय इनकी दवा निर्माण कंपनी विवादास्पद भी हुई। कहा गया कि दवाओं में जानवरों की ही नहीं, मानवों की हड्डियों का चूरा मिलाया गया है। इसके पूर्व अपने कर्मचारियों को कम वेतन देने का आरोप भी उन पर लगा और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की वृंदा करात ने उनका खुला विरोध शुरू किया। पर इस विवाद से बाबा को लाभ ही हुआ। वे मीडिया में छा गये। बाबा ने उच्च वर्ग में अपनी घुसपैठ की और चेले मूंडे। यहां तक कि बाबा ने फ़िल्मी सितारों और नायिकाओं तक को योग की शिक्षा दी ताकि वे अधिक समय तक भोग करने के काबिल बनी रहें। बाबा ने देश के बड़े-बड़े शहरों में योग प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन किये। इसमें शामिल होने वाले लोग़ों से अच्छी-खासी फ़ीस वसूली जाती थी। धीरे-धीरे बाबा काफ़ी मालदार हो गये। इन्होंने हरिद्वार में एक बड़ा आयुर्वेदिक अस्पताल खोला और अपने आश्रम को भी अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त किया। देश के पूंजीपतियों ने इनके गेरुए चोले और जनता में इनकी लोकप्रियता को देख कर इन पर धन की अच्छी-खासी बारिश की। इन्होंने विदेशों में भी योग प्रशिक्षण के कार्यक्रम आयोजित किये और वहां से डॉलर बटोरा। इसके बाद बाबा ने टीवी के दो चैनल खरीद लिए, क्योंकि बाबा को मालूम था कि टीवी प्रचार की दृष्टि से कितना ज़्यादा उपयोगी है। बाबा जब धन से संतृप्त हो गये तो इनकी निगाह राजनीति पर पड़ी। इन्होंने देखा कि राजनीति से ज़्यादा कमाई का साधन और कोई नहीं है। दूसरे राजनीति में सत्ता तक पहुंचने की संभावना हमेशा बनी रहती है। इसलिए इन्होंने राजनीति में आने की घोषणा कर दी। इसके लिए बाबा एक अलग पार्टी बनायेंगे और चुनाव मैदान में खुद तो उतरेंगे ही अपने चेलों को भी उतारेंगे। वैसे लोकसभा चुनाव होने में अभी काफ़ी देर है, पर तब तक का समय बाबा तैयारियों में लगायेंगे। पूरे देश में घूम-घूम कर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करेंगे और लोग़ों के दिमाग में यह बात डालते जायेंगे कि वे एक नई पार्टी बना कर चुनाव लड़ेंगे। बाबा योगगुरु तो हैं ही जनता की नब्ज़ पर भी अच्छी-खासी पकड़ रखते हैं। वे समझ चुके हैं कि जनता आज के नेताओं से त्रस्त हो गई है और उसे कोई विकल्प दिखाई नहीं पड़ता। यही कारण है कि दो प्रमुख गठबंधनों में कभी इसको तो कभी उसको वोट देकर जिताती रही है। इसके अलावा लोग़ों का राजनीति से मोहभंग भी होता जा रहा है जिसका पता गिरते मत प्रतिशत से चलता है।

कहा जा रहा है कि बाबा भ्रष्टाचार और अनैतिकता-नैतिकता का सवाल खड़ा कर चुनाव लड़ेंगे। सवाल है, भ्रष्टाचारी कौन है? भ्रष्टाचारी और अनैतिक कार्य करने वाले लोग़ तो वही हैं जो बाबा के साथ मंचों पर दिखाई पड़ते हैं। वे जब यह देखेंगे कि बाबा उनकी जगह लेने की तैयारी में हैं तो तुरंत उनके खिलाफ़ हो जायेंगे।

कहा जा रहा है कि बाबा भ्रष्टाचार और अनैतिकता-नैतिकता का सवाल खड़ा कर चुनाव लड़ेंगे। सवाल है, भ्रष्टाचारी कौन है? भ्रष्टाचारी और अनैतिक कार्य करने वाले लोग़ तो वही हैं जो बाबा के साथ मंचों पर दिखाई पड़ते हैं। वे जब यह देखेंगे कि बाबा उनकी जगह लेने की तैयारी में हैं तो तुरंत उनके खिलाफ़ हो जायेंगे। उदाहरण के लिए महाभ्रष्ट लालू प्रसाद यादव ने उनके चुनावी राजनीति में आने का खुला विरोध शुरू कर दिया है।

बाबा को यह भरोसा है कि योगाचार्य होने के कारण इस देश की धर्मप्राण जनता का उन पर विश्वास होगा और जब वे पार्टी बना कर चुनाव मैदान में उतरेंगे तो जनता उनके सिवा और किसी को वोट नहीं देगी। लेकिन यह बाबा का भ्रम मात्र है। बाबा को अपने खास अनुयायियों के वोट भले ही मिल जायें, पर आम जनता इन्हें सिर्फ गेरुए वस्त्र के कारण वोट नहीं दे सकती। जनता इस बात को समझती है कि योग सिखाना अलग बात है और राजकाज चलाना अलग। फ़िर जिन दलों ने बरसों से अपने वोट बैंक बना रखे हैं, वे इतनी आसानी से लूटे नहीं जा सकते। बाबा जब राजनीतिक पार्टी बना लेंगे तो अभी जो राजनेता उनका सम्मान करते हैं और उनके साथ मंच पर आसीन होते हैं, वे उनका विरोध शुरू कर देंगे और झूठे-सच्चे अनेकों आरोप लगा कर जनता में उनकी छवि को बदनुमा बनाने की कोशिश करेंगे। वे उन्हें बहुरुपिया घोषित कर देंगे। चुनाव मैदान कोई योग का शिविर नहीं कि वहां बाबा की ही चले। वैसे अच्छा है, बाबा राजनीतिक पार्टी बना कर चुनाव लड़ें। इसके बाद उन्हें खुद-ब-खुद सारी सच्चाई समझ में आ जायेगी।

- मनोज